

NOTIFICATION re KERALA LAND ASSIGNMENT RULES

The Deputy Minister in the Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Shri Shinde): I beg to lay on the Table a copy of Notification S.R.O. No. 403/66, published in Kerala Gazette dated the 18th October, 1966, making certain amendment to the Kerala Land Assignment Rules, 1964, under sub-section (3) of section 7 of the Kerala Government Land Assignment Act, 1960, read with clause (c) (iv) of the Proclamation dated the 24th March, 1965, issued by the Vice-President, discharging the functions of the President, in relation to the State of Kerala. [Placed in Library. See No. LT-7375/66].

12.09 hrs.

OPINIONS ON SIKH GURDWARAS BILL

Shri A. S. Saigal (Janjgir): I beg to lay on the Table Paper No. IV to the Bill to provide for the better administration of Sikh Gurdwaras situated in different States of Indian Union and for inquiries into matters connected therewith which was circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the direction of the House on the 3rd September, 1965.

12.10 hrs.

**RE MOTION FOR ADJOURNMENT
DETENTION OF JAGATGURU SHANKRACHARYA OF PURI**

श्री बड़े (खारगोन): अध्यक्ष महोदय, कल भी मैंने एडजर्नमेंट मोशन दिया था और उसे डिफेंड कर लिया। आज भी मैंने दिया कि जगद्गुरु शंकराचार्य को गिरफ्तार करके ले जाया गया... (अवधान)... अब इसमें हमें क्या करना चाहिए... (अवधान)

अध्यक्ष महोदय: अब किमी की गिरफ्तारी का मामला एडजर्नमेंट के लिए कैसे प्रासक्तता है... (अवधान)

श्री बड़े: यह दिल्ली में हो रहा है... (अवधान) होम मिनिस्टर स्टेटमेंट दें।

अध्यक्ष महोदय: दिल्ली में हो या कहीं भी हो... (अवधान) मिस्टर बड़े, यह अलाहिदा बात है कि आप कहें कि मैं स्टेटमेंट मांग लूँ लेकिन यह एडजर्नमेंट मोशन का मामला कैसे हो सकता है... (अवधान) आर्डर आर्डर।

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): He just wants a statement from the Minister. That is all.

Mr. Speaker: Order, order. I am asking the Home Minister to make a statement.

Shri Hem Barua (Gauhati): This is a serious matter. The Swamiji went on a fast on yesterday, and the Government have arrested him now. This will provoke the sentiment of some people in this country.

Mr. Speaker: Order, order. All Members will sit down. I am asking the Home Minister to make some statement in that matter.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर): मैं और बात कहना चाहता हूँ। हम आपकी आज्ञा के बिना एक शब्द भी नहीं बोलते... (अवधान) मैं आप से पूछे बिना बोलता नहीं। आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए आप से पूछ कर ही कुछ कहना चाहता हूँ। अगर आप अनुमति दें तो मैं निवेदन करूँ।

मेरा निवेदन यह है कि आज से कुछ दिन पहले इसी प्रकार की चर्चा आयी थी कि जब सन्त फतेह सिंह ने गुरुद्वारे में घातमरण घनशन शुरू किया था तो गृह मन्त्री ने यह कहा कि हम गुरुद्वारे के अन्दर नहीं जा सकते और वहाँ बैठ कर के सारी चीजें बलती रहें।

लेकिन जगद्गुरु शंकराचार्य को प्रातःकाल 2 हजार पुलिस भेज कर के गिरफ्तार किया गया है और जिस प्रकार से दीवारों के ऊपर से लाथ लाथ वर वह गए हैं, यह इस तरह जो गिरफ्तारियां हो रही हैं, गृह मन्त्रालय और दिल्ली की पुलिस जो बिल्कुल बे लगाम होकर गिरफ्तारियां करती जा रही है, आखिर कब तक हम अपने असन्तोष को दबा कर रखेंगे... (व्यवधान)

Shri Ranga (Chittoor): The general atmosphere in the country is explosive enough, and I would like to suggest to the hon. Home Minister not to do anything either consciously or unconsciously to add some more fuel to the explosive situation that we are faced with. It concerns not only the Congress Party and the Government, but all political parties and all public men in this country. Let them think of some way by which they can tackle the situation without in any way injuring or hurting the religious sentiments of our people.

Mr. Speaker: Does the Minister propose to make a statement?

The Minister of Home Affairs (Shri Y. B. Chavan): If you so desire, I can give some facts straightaway.

Mr. Speaker: Yes.

The Minister of Home Affairs (Shri Y. B. Chavan): Sir, the House is aware that agitation for a complete ban on cow slaughter is continuing in different parts of the country in spite of the policy statement made on behalf of Government on 4th November. On 20th November, Jagatguru Swami Niranjin Dev Tirath of Puri commenced an indefinite fast in the compound of the Dharam Sangh, Kashmir Gate, Delhi. Delhi Administration, who are responsible for the maintenance of law and order in the Union Territory of Delhi, gave full consideration to the likely repercussions of the fast undertaken by Swami Niranjin Dev Tirath especially in the

light of the unfortunate events of November 7, 1968. In their view the action of Swami Niranjin Dev Tirath was prejudicial to the maintenance of public order in Delhi. He has accordingly been detained under section 3(a)(ii) of the Preventive Detention Act in pursuance of an order issued by the Deputy Commissioner, Delhi.

श्री हुषम चन्व फड़वाध (देवास) :
यह बक्तव्य बिल्कुल असन्तोषजनक है . . .
(व्यवधान) . . . सरकार जान-बूझ कर
ऐसा कर रही है ।

प्रथम सहाय्य : अगर आप इजाजत दें तो एक-एक कर के ब्लाऊं ।

Shri Hari Vishnu Kamath: On a point of order, Sir. If I remember aright, the Home Minister said that the Delhi Administration which was consulted in the matter has given a certain view. I am not going into the merits of it at the moment. The point of order is, who is responsible for the action taken? He cannot pass on the buck to the Delhi Administration. Here in Parliament the Home Minister is responsible, not some Lt. Governor.

Shri Y. B. Chavan: Yes; I am responsible. That is why I have made the statement.

Mr. Speaker: There is no denying the fact that he is responsible.

Shri Hari Vishnu Kamath: Does the Government agree with the action taken? Let him say about that.

Mr. Speaker: He has said it.

Shri Hem Barua: Sir, on a point of order. The hon. Minister said that the Swamiji has been arrested under the Preventive Detention Act. That Bill is being discussed and it has not yet been passed.

Shri Surendranath Dwivedy (Kendrapara): It is already in force. The Bill only seeks to extend it.

Mr. Speaker: This is the use to which points of order are put.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: अध्यक्ष महोदय, जिन परिस्थितियों में श्री यशवन्त राव चव्हाण देश के नये गृह मंत्री पद पर आसीन हुए हैं और उनके आसीन होने के बाद दिल्ली में इस प्रकार की परिस्थितियाँ जो पैदा हो रही हैं, विशेष कर श्री जगतगुरु शंकराचार्य की गिरफ्तारी से और वृन्दावन में श्री प्रभूदत्त ब्रह्मचारी की गिरफ्तारी से, अभी जैसा गृह मंत्री ने कहा कि उनसे शान्ति को खतरा उत्पन्न हो गया था, इसलिये उनको गिरफ्तार किया गया। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या भारत सरकार ने अब यह निर्णय ले लिया है कि धर्म स्थानों में बैठ कर कोई भी व्यक्ति यदि इस प्रकार अनशन करेगा, तब आपको पुलिस दवाव कूद कर इसी तरह से अन्दर जा सकती है, और उनको गिरफ्तार किया जा सकता है? जब कि मस्जिदों और गुरुद्वारों में जाते हुए आपको डर लगता है, वहाँ जा कर गिरफ्तार नहीं कर सकते? दूसरा मैं जानना चाहता हूँ कि जगतगुरु शंकराचार्य के अनशन से शान्ति को कौन सा खतरा उत्पन्न होने जा रहा था? जब कि उनका अनशन अहिंसात्मक अनशन के रूप में था, और शान्ति के लिये उन्होंने बराबर प्रयत्न की थी। बल्कि उनके आन्दोलन से वातावरण कुछ शान्त होने जा रहा था। क्या इस जनतन्त्रीय सरकार ने जनता को अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिये इस प्रकार के जो शान्तिपूर्ण उपाय हैं, उनको बरतने पर रोक लगा कर एक अधिनायकवादी प्रवृत्ति को जन्म नहीं दिया है?

अध्यक्ष महोदय: सवाल के पहले हिस्से का जवाब देना है, जिसमें इन्होंने कहा है कि क्या सरकार ने धर्म स्थानों में दाखिल हो कर गिरफ्तारी करने का फैसला कर लिया है।

Shri Y. B. Chavan: Sir, I do not know whether the question of policy arises, because everything, every case

will have to be seen on its own merits and facts. I have just made a statement of facts on this.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: उनके अनशन से शान्ति को कौनसा खतरा उत्पन्न हो रहा था? अध्यक्ष महोदय, आप ने गृह मंत्री से क्या सवाल पूछा और क्या गृह मंत्री ने उसी सवाल का उत्तर दिया है—इसका निर्णय आप ही कीजिये।

अध्यक्ष महोदय: मैं जो सूझा हूँ वह यह है कि इस सवाल का अभी जवाब नहीं दिया जा सकता, यह हर एक केस पर अलग अलग मुनहसिर होगा कि आया

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: यह तो कोई जवाब नहीं है।

श्री हुकम खन्व कछवाय: सरकार का नानि क्या है?

Dr. M. S. Aney (Nagpur): I am very sorry to hear the reply of the Home Minister, but I warn that so long as Sankaracharya is arrested and detained like that I shall have to fast unto death even.

Shri Surendranath Dwivedy: Sir, some reference was made that he has been arrested and taken to an unknown destination, but the Minister in his statement only said that he has been detained under the Preventive Detention Act. I would like to know whether actually he is under house-arrest or he has been taken to some unknown destination and kept inside some jail.

Some hon. Members: He has not heard the question.

Mr. Speaker: According to the newspapers, the hon. Member says, he has been taken to some unknown destination. He wants to know whether he has been taken to some unknown destination or he is kept here somewhere or he is under house arrest?

Shri Y. B. Chavan: I can give the information I have. He has been

flown to Madras by the morning plane and he will be kept in Pondicherry.

Shri Ranga: Sir, has he taken due notice of what Dr. Aney, the father of this House, has said just now. I hope the hon. Home Minister will take due notice of what Dr. Aney has just now said. If that were to happen, my fear is the whole country will be on fire. Let the hon. Home Minister, even now, take time by the forelock and see that some wise counsel come to prevail in the ranks of the Government, as otherwise it is going to be very dangerous.

श्री बड़े : हमारे होम मिनिस्टर साहब जो नन्दा जी के स्थान पर बैठे हुए हैं और जिनसे बहुत सी आशाएँ थीं, उनसे मैं यह पूछना चाहता हूँ कि आप ने जो एग्स्ट की है, क्या आप उससे सेटिस्फाइड हैं कि उन्होंने अनशन करने के बाद कोई ऐसी घटना की है, जिसकी वजह से शान्ति भंग होने जा रही थी? क्या आप यह समझते हैं कि इस घटना से पूरा हिन्दू समाज आपके खिलाफ नहीं हो जायेगा?

अध्यक्ष महोदय : आप ने सवाल पूछा। मैं मंत्री महोदय से कहूँगा कि वह जवाब दें। अगर इकट्ठा वह सवालों के जवाब दे दें तब भी कोई हर्ज नहीं है।

श्री बड़े : इकट्ठा नहीं होना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : मैंने आप को अकेले बुलाया है और इतने मेम्बर खड़े हो जाते हैं।

श्री हुकम चन्द कल्लवाय : यह सरकार सर्वनाश कर रही है। इस को जेल में डाल देना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : मैं जवाब दी नौ दिनवा सकता हूँ।

श्री बड़े : मंत्री जी जवाब कहाँ दे रहे हैं मंत्री बात का।

Mr. Speaker: Shri Bade asks where was the apprehension of any breach in the peace of the city or any violence here so soon after his commencing the fast, as he had begun his fast only yesterday.

Shri Y. B. Chavan: I can only give the information which I have received. The judgment has naturally to be taken by the Delhi Administration. Certainly, I am not running away from it.... (Interruptions).

Mr. Speaker: Order, order. If hon. Members speak simultaneously, we cannot proceed. Nothing said by a Member will be recorded, unless I have identified him.

Shri Hukam Chand Kachhavalya:***

Shri Y. B. Chavan: Certainly I am not shirking my responsibility in the matter. I am prepared to take full responsibility..... (interruptions).

श्री प्रकाशचौर शास्त्री (दिल्ली) एंड-
मिनिस्ट्रेशन के लिये वहाँ बह रहे हैं। मेट्रल गवर्नमेंट ने गिरफ्तार किया है।

Shri Y. B. Chavan: But to take a certain view of a certain situation is the legal responsibility of the officer concerned and the administration concerned. He certainly watched the situation for one day completely. He did not take any panicky action or any action just to penalise somebody. He watched the situation and assessed its reaction. If the fast of Sankaracharya was allowed to continue, possibly things would have become worse. That was the view he took and he acted on it.

श्री यशपाल सिंह (कैरना) : मैं माननीय होम मिनिस्टर से इतनी बात कहना चाहता हूँ कि यह सरकार सत्याग्रह से और अनशन से बनी है। महात्मा गांधी जी ने अनशन भी किया और सत्याग्रह भी किया। महात्मा जी

[श्री यशपाल सिंह]

ने 21 दिन का अनशन किया, लेकिन सरकार ने उन्हें कभी गिरफ्तार नहीं किया, कभी जेल में नहीं डाला। फिर अनशन करना कोई अपराध तो नहीं है। महात्मा और साधू हृदय परिवर्तन के लिये अनशन करते हैं। खास तौर से शंकराचार्य जी महात्मा कोटि कोटि जनता की श्रद्धा के पात्र हैं। कोटि कोटि जनता की श्रद्धा उनके साथ है। आज सरकार को क्या अधिकार है कि वह ऐसे सन्त पर हाथ डाल सके। मैं गवर्नमेंट का स्पष्टीकरण चाहता हूँ। क्या वह कोई एम्प्लेनशन इनके लिये दे सकती है ?

अध्यक्ष महोदय : मैं श्री यशपाल सिंह से यह कहना चाहता हूँ कि जब वह बोलने के लिये खड़े हों तब अपना मुँह मेरी तरफ रखें ताकि मैं कुछ कह सकूँ। वह मुझ को इतना मौका भी नहीं देते।

Shri Tyagi (Dehra Dun): In view of the fact that the policy of the Government, which was explained the other day, is for cow protection and the Government have promised to see it through and are in consultation or contact with the State Governments to see it through, is it the intention of the Government to try to persuade Sankaracharya to give up the fast saying that their policy fell in line with what he wanted to achieve by fasting?

Shri Y. B. Chavan: Certainly, our effort will always be to persuade Sankaracharya or any other person, for that matter, to give up fast.

श्री हुकम चन्द कछवाय : यह आन्दोलन पिछले कई दिनों से चल रहा है इस देश के अन्दर। देश के सभी भागों से इसकी मांग आ रही है कि देश में गोहत्या बन्द होनी चाहिये। यह देश के लिये बड़ा कलंक है। यह आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है। आप ने इस आन्दोलन को दबाने के लिये

गोली भी चलाई। अब लोगों को जेल में डालना शुरू कर दिया है। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सरकार के ऊपर किसी विदेशी सरकार का दबाव है कि यहाँ पर गोहत्या बन्द न की जाये। यदि दबाव है तो वह बतलाये कि किस देश का दबाव है। अगर ऐसा नहीं होता है तो यह आन्दोलन बन्द नहीं हो सकता। मैं जानना चाहता हूँ कि यह जो कार्रवाई की गई है कि शंकराचार्य को गिरफ्तार किया गया है उससे क्या गवर्नमेंट यह महसूस करती है कि देश में यह आन्दोलन दब जायेगा। इससे आतंक . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये। आप का सवाल हो गया।

Shri Y. B. Chavan: It is a very fantastic suggestion that we are doing this under the pressure of any other Government or something. This is rather a difficult situation and a difficult decision. I know, it is not a happy decision that one has to make.

श्री हुकम चन्द कछवाय : बीस साल हो गये हैं आप ने कोई फैसला नहीं किया।

Mr. Speaker: This is grossly disorderly. I have allowed him every opportunity.

श्री हुकम चन्द कछवाय : यह सरकार बीस साल से शासन चला रही है। बीस सालों में कोई फैसला नहीं किया।

Mr. Speaker: Now I will have to ask him to go out.

श्री हुकम चन्द कछवाय : आप के पास और कोई हथियार नहीं है सिवा इसके कि बाहर चले जाओ। यहाँ पर इस प्रकार की कार्रवाई हो रही है . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बाहर चले जायें।

(Shri Hukam Chand Kachhavaia then left the House).

Shri J. B. Kripalani (Amroha): Sir, may I submit that there have been fastings before this and the Government had not taken precipitate action? It was only for one day that the fast had lasted. They should have tried to persuade him, his friends and others and if they had failed then they should have taken this action but not in such a hurry.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : वह तो बात करने में बेइज्जती महसूस करती है ।

Shri Kapur Singh (Ludhiana): The hon. Home Minister has informed the House that the Delhi Administration duly considered the likely repercussions that the fast of the Jagadguru might have in the Delhi city. I want to ask whether the Government of India, that is, the hon. Home Minister, also duly considered the likely repercussions of the arrest and the treatment that is being meted out to the Jagadguru on the Hindu India as a whole.

An hon. Member: There is no such thing as Hindu India.

Shri Y. B. Chavan: Sir, I was interrupted when I was replying to the question put before, but as I was explaining, we have all the high regard and respect for Shankaracharya.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : यह रेगार्ड का तर्क है कि गिरफ्तार कर लिया जाये ।

Shri Y. B. Chavan: Therefore, it was always a difficult decision. It is not a happy decision, that one is required to go and arrest a great man like Shankaracharya; but one has to see what repercussions it would produce if the administration had not acted the way it did. It would certainly have started some agitation in the city of Delhi and would have resulted in some sort of any ugly situation. We know that the sentiments of some people would be hurt and we are very sorry for it, but one has to act

in the interest of the country.... (Interruption).

Shri Hem Barua: Sir, it is an alarming news and what the Home Minister has said is also equally alarming. When our ex-Finance Minister, Shri Morarji Desai, went on a fast in 1956 at Amhedabad—then he was the Chief Minister of Bombay.... (Interruption).

Shri Y. B. Chavan: No.

Shri Morarji Desai (Surat): I was.

Shri Hem Barua: He was and he says, he was. I know that he was undergoing a fast.

The present Home Minister was in the administration of Bombay at that time but Shri Morarji Desai was not arrested, but in this particular case the Government has acted with undue haste, I would say.

Shri Ranga: And unwise too.

Shri Hem Barua: This is a very disturbing development for the country. Now, we hear another disturbing news. Dr. Aney has announced his decision to undergo a fast. May I make a submission to you and request you on behalf of the House to request Dr. Aney not to undertake the fast? And, are we going to have an assurance from the Home Minister that Dr. Aney is not going to be arrested tomorrow if he is going to go on fast today?

Mr. Speaker: I agree with the first part. I would certainly make an appeal on behalf of the House to Dr. Aney that he should not undertake the fast. But with the second part, I can't do anything.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : प्रधान मंत्री जी को कह दीजिये कि वो हत्या पर पाबन्दी लगा दें । यह जो बात होने वाली है यह तो आप कहते नहीं हैं लेकिन दूसरी बातें आप कह रहे हैं ।

Dr. M. S. Aney: I will wait for seven days in response to your appeal and see what he, the Minister of Home Affairs, does.

Shri Tyagi: It is a great relief.

Some hon. Members rose—

Mr. Speaker: This is not the time when a full-dress discussion can take place. (Interruption). It is going on. The comments and the criticisms and other things are being expressed.

Shri Hari Vishnu Kamath: We will say much more in a fuller discussion. (Interruption).

Mr. Speaker: No, no. I cannot continue it so indefinitely. (Interruption). Shri Maurya.

श्री मौर्य (अलीगढ़) : अपने देश के संविधान द्वारा यह व्यवस्था दी गई है कि देश के नागरिकों की रक्षा कानून एक प्रकार से करेगा और कानून की निगाह में देश के तमाम नागरिक एक समान समझे जायेंगे, ईन्क्विजिशन एंड ईन्क्वेलेटी बौकीर ला। इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए पहले भी भूखहड़तालें हुई हैं, हफ्ते दो हफ्ते तक चली हैं। उनके होते हुए यही नहीं कि सरकार के आदमी गये हैं बल्कि सरकार ने आप को भी उनको समझाने के लिए भेजा है। इस तरह की व्यवस्था यहां पर रही है। जत्र गुरु शंकराचार्य ने एक विषय को लेकर सत्याग्रह किया है, भूखहड़ताल की है तो क्या सरकार का यह कर्तव्य नहीं हो जाता था कि जैसे उसने पहले सरकारी लोगों को और स्वयं आप को भी इसके लिए कहा है कि वहां उनको जा कर मनाया जाये तो इस केस में भी, इनके बारे में भी इस तरह का विचार क्यों नहीं किया गया। यह मेरा पहला सवाल है।

दूसरा सवाल मेरा गोहत्या के बारे में है। सरकार एक बयान देने वाली है। सरकार अन्दर खाने एक फैसला भी ले चुकी है। सरकार की यह नीति हो गई है कि खूब

तनाव करा दो, शक्ति का प्रदर्शन करो और जब पूरा तनाव तन जाये उसके बाद फैसला देश के सामने रख दो ताकि जनता उसके साथ हो जाये। ऐसा सरकार ने बम्बई ग्जरात के बारे में किया, ऐसा ही आंध्र के बारे में किया, ऐसा ही पंजाब और हरियाणा के बारे में किया और ऐसा ही सुनारों के बारे में किया। मैं जानना चाहता हूँ कि सक्ती के प्रदर्शन को बढ़ावा दे कर और जनतंत्र की हत्या जब सरकार करती है तो जो वह एक फैसला ले चुकी है जनता को सान्त्वना देने के लिए अपने उस फैसले को क्यों नहीं सुना देती है और क्यों नहीं बता देती है कि उसने क्या फैसला लिया है ?

अध्यक्ष महोदय : एक बात मैं कहना चाहता हूँ। मुझे किसी गवर्नमेंट ने या किसी भी मिनिस्टर ने नहीं भेजा था।

श्री मौर्य : पर आप गये थे।

अध्यक्ष महोदय : यह दूसरा सवाल है, मैं जाऊं या न जाऊं। अब भी जाने के लिए तैयार हूँ अगर हाउस भेजे।

श्री मौर्य : मंत्री आते हैं, मंत्री जाते हैं। उन समय कौन गृह मंत्री या आज कौन है, इससे मेरा कोई मतलब नहीं है। लेकिन जो नीति होती है वह पूरी कबिनेट की होती है। अब नीति क्या बदल गई है, कोई एक दिन के लिए भी अनशन करे तो उसको गिरफ्तार कर लिया जायेगा ? यह जो नीति है यह हमेशा रहेगी या यह नीति पहले से चली आ रही है ? अगर पहले से नहीं चली आ रही है तो क्या अब यह नीति बना ली गई है ?

अध्यक्ष महोदय : तीन बार आप को मैंने मौका दिया है लेकिन आप ने सवाल नहीं पूछा है। बहल की इजाजत तो मैं नहीं दे सकता हूँ।

श्री मौर्य : मैं प्रश्न ही तो पूछ रहा हूँ। क्या नीति बदल गई है ? एक दिन कोई

मूख हड़ताल करेगा तो उसको गिरफ्तार कर लिया जायेगा ?

Mr. Speaker: The question has come now. The Home Minister might answer it.

क्या कोई नीति में परिवर्तन आया है। पहले कुछ थी और अब कुछ और नीति होगी ?

Shri Y. B. Chavan: There is nothing like a very rigid and inflexible policy in this matter. One has to see the things and take action accordingly.

श्री मधु लिमये : जो सवाल पूछा था उसका जवाब कहाँ आया है ? नीति परिवर्तन के बारे में पूछा था।

नकली लॉह पुरूष आ गए हैं। और एक गाय की हत्या हो गई है, श्री गुलजारी लाल नन्दा की।

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): After the statement of the hon. Home Minister, it appears that this information is based on the information of the Delhi Administration and that this arrangement was made under the instructions, not, of course, from the Centre, but from the Delhi Administration. This clearly reveals that there cannot now be any hunger-strike by any section of the population if they want to ventilate their grievances, or by going on a general strike or by countrywide agitation or by going on a hunger-strike. So, I would like to know whether this will be the policy henceforth and that the Government will view it as a breach of apprehension or a breach of peace and that hunger-strikes will not be allowed in this country.

Mr. Speaker: It is a hypothetical question. How can I allow it?

Shri S. M. Banerjee: It has been done.

श्री के० दे० मासवीय (वस्ती) : जगद्गुरु शंकराचार्य के अनशन का समाचार सुनकर

हम सबको बड़ी चिन्ता हुई है और दुःख भी बहुत हुआ है। उसके पश्चात् जब सरकार का यह निश्चय हुआ कि चूँकि विशेष परिस्थितियाँ हैं इसलिए उसको नज़रबन्द करके रखा जाए तो हम में से बहुतों को यही ध्यान आया कि सात नवम्बर को जो घटनायें यहाँ घटीं उसकी वजह से मजबूरन सरकार को इस तरह का काम करना पड़ा जिसको वह कभी भी करना नहीं चाहती थी। यह मैं समझता हूँ। जो हिन्दू समाज में आज परेशानी और चिन्ता है, उसको सरकार भी जानती है। इसलिए मैं आपके द्वारा सरकार को यह सुझाव देना चाहता हूँ कि—

श्री मधु लिमये : प्रश्न पूछिये।

श्री के० दे० मासवीय : परिस्थितियों को देखते हुए क्या यह मुनासिब नहीं होगा कि सरकार कांग्रेस बैंचों के और और मुनासिब समझें तो दूसरों में से भी दो चार पांच सीनियर सदस्यों को जगद्गुरु शंकराचार्य के पास भेजें और उनसे जा करके यह प्रार्थना करें— मैरिट के प्रश्न को अलग रख कर— कि इस समय हम सब पर कृपा करके अनशन छोड़ दें और हम प्रयत्न करें, जेल में उनको समझाने की कोशिश करें कि विशेष परिस्थितियों के कारण यह करना पड़ा है और इसलिए वे हमारी प्रार्थना मान लें और अनशन न करें। क्या सरकार इस बात का मंजू करेगी ?

अध्यक्ष महोदय : यह सरकार सांच ले।

Shri Tygai Let us go to the next item.

Dr. L. M. Singhvi (Jodhpur): We would particularly like to know the specific efforts that were made to persuade him not to undertake the fast. We would also like to know whether any progress has been made in obtaining the concurrence of the policy announced by the Government of India by all those States which have not yet complied with the policy which is also contained in the Constitution. I would like to know whether

[Dr. L. M. Singhvi]

any efforts are now going to be made to arrive at such concurrence from all the States and also to persuade Jagat-guru Sankaracharya to give up his fast.

Shri Y. B. Chavan: As far as the efforts to persuade him are concerned, I have met him. Personally I have not made efforts, I must say that. But looking from the statement that he has made, it was apparent to us that he would not be amenable to our efforts to immediately give up the fast here. As far as the question of pursuing the matter of policy with different States is concerned, the efforts will continue.

श्री काशी राम गुप्त (अलवर) : जगद्गुरु शंकराचार्य करोड़ों हिन्दुओं की आत्मा के प्रतीक है और वह पूर्ण ग्रहिसक थे और हैं। जब इतना ऊंचा और महान व्यक्ति ग्रहिसक है तो उससे सरकार को किस आधार पर हिंसा का डर हुआ ? अभी हमारे गृह मंत्री जी ने यह कहा है कि दिल्ली सरकार को यह डर हुआ, मैं जानना चाहता हूँ कि उसका कौन सा आधार था जिससे उसको डर हुआ। क्या उनकी नीति यह बन गई है कि भले ही कोई भी ग्रहिसक आन्दोलन हो, कोई उपवास करें, कोई व्रत करे, कोई ग्रहिसक तौर से जुलूस निकाले उन सबको हिंसा के नाम पर दबा दिया जाये करेगा ?

अध्यक्ष महोदय : यह सवाल हो चुका है।

श्री काशी राम गुप्त : मैंने यह सवाल किया है . . .

अध्यक्ष महोदय : यह सवाल हो चुका है।

श्री काशी राम गुप्त : हिंसा से सम्बन्ध नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : यह हो चुका है।

श्री पालीवाल (हिण्डान) : मेरे माननीय मित्र श्री मालवीय जी ने सुझाव दिया है कि जगद्गुरु को कुछ लोग सरकार की तरफ से भेजे जायें जो कि उनको समझने की कोशिश करें। मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि बाहर के लोग भी और इस सदन के प्रतिनिधि भी अलग अलग दलों के कम्पनिस्टों को मिलाकर जाकर जगद्गुरु शंकराचार्य को समझाने की कोशिश करें तो मैं समझता हूँ ठीक होगा बजाय इसके कि सरकार अपनी तरफ से अपना रिप्रेजेंटेटिव भेजे। सरकार के लिए ऐसा करना ठीक नहीं है मेरे खयाल में।

Shri Indrajit Gupta (Calcutta South West): While making it clear on behalf of our Party that we do not at all support the demand for a total ban on cow slaughter nor for this type of agitation, nevertheless I would ask this question: even if the Delhi Administration was technically responsible for taking this decision to arrest, they could not possibly have taken the decision to remove him physically from here to Pondicherry without the approval and the active co-operation of the Central Government. The Delhi Administration cannot remove him to Pondicherry. Therefore, I would like to know this from the hon. Minister: when they are fully responsible for the entire operation which has been carried out, including his transfer to Pondicherry, what is the idea, what is the policy, behind this transfer? Did Shankaracharya represent a point of tension and if so, why is this point of tension being transferred from North India to South India? We would like to know this.

Mr. Speaker: Mr. Priya Gupta.

श्री प्रिय गुप्त (कटिहार) : आज जब मैं पुरानी दिल्ली स्टेशन में आ रहा था, तो मैंने सुना कि कुछ मिडल-एजिड लोग आपस में यह बात कर रहे थे कि शंकराचार्य और दूसरे लोगों की एरेस्ट से यह प्रतीत होता है कि सबसे अच्छा यह होगा कि हम हिन्दू धर्म

Shankaracharya
of Puri (Adj. M.)

Kerala Appropriation
(Nos. 3 to 5) Bills.

को छोड़ कर मुसलमान और सिख धर्म में चले जाये, क्योंकि माइनारिटीज की एग्जिबिनेस की वजह से सरकार को उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही करने में डर लगता है, जैसे संत फ़तेहसिंह के फ़ास्ट के समय उनको गिरफ़्तार करने में उस को डर लगा था। क्या सरकार यह जानती है कि हिन्दुओं में इस किस्म की फ़ीलिंगज़ प्रा रही हैं; हां, तो उन फ़ीलिंगज़ को दूर करने के लिए वह क्या कार्यवाही कर रही है ?

अध्यक्ष महोदय : श्री सिद्धान्ती।

श्री प्रिय गुप्त : चूंकि माइनारिटीज एग्जिबिनेस है, इसलिए सरकार को उनके विरुद्ध कार्यवाही करने में डर लगता है। जब संत फ़तेहसिंह ने फ़ास्ट किया था, तो सरकार ने उनको गिरफ़्तार नहीं किया था।

Mr. Speaker: Order, order. Mr. Priya Gupta will sit down. I am asking him to resume his seat. I have heard his question. He might resume his seat.

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती (झज्जर) : अध्यक्ष महोदय, मैं बड़े विनीत भाव से आपके द्वारा माननीय गृह मंत्री से यह जानना चाहता हूँ कि क्या उनको मालूम है कि जगद्गुरु शंकराचार्य आद्य की गद्दी पर बैठने वाले जितने शंकराचार्य महाराज हैं, उनको सारे हिन्दू जगत में— भारत में और बाहर भी— वही सम्मान है, जो पापाए-रोम का ईसाई जगत में है। गृह मंत्री ने जो कुछ भी कार्यवाही की हो, लेकिन उन्होंने 1 मर्फ "श्री निरंजनदेव" क्यों कहा है ? उनके नाम के साथ "जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य महाराज" आना चाहिए था। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या गृह मंत्री इस अपमान को दूर करने का यत्न करेंगे।

Shri Tirumala Rao (Kakinada): May I draw the attention of the House to

this? There are several Jagadgurus and Sankaracharyas all over India. There is no similarity with Pope. Everybody is not like Pope, as my hon. friend suggests. Therefore, his domain over the Hindu Society is nebulous and intangible. These are done for political purposes.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, मैं बड़ी नम्रतापूर्वक यह निवेदन करना चाहता हूँ कि सरकार ने यह जो निर्णय लिया है, वह संविधान की मान्यता के विपरीत है। सरकार के इस निर्णय के विरोध-स्वरूप में मैं सदन त्याग करता हूँ।

(*Shri Prakash Vir Shastri then left the House.*)

श्री बड़े : हम चाहते हैं कि श्री चहुवाण अपने साथ सात घाट आदमियों को लेकर शंकराचार्य महाराज को समझायें। अगर वह नहीं मानते हैं

अध्यक्ष महोदय : मैंने सुन लिया है। अब माननीय सदस्य बैठ जायें।

श्री बड़े : इस स्थिति में हम सदन में बैठ कर काम करने में असमर्थ हैं। इसलिए हम सभा-त्याग कर रहे हैं।

(*Shri Bade and some other hon. Members then left the House.*)

12.45 hrs.

KERALA APPROPRIATION (NO. 3)
BILL, 1966

Mr. Speaker: Mr. Sachindra Chaudhuri.

The Deputy Minister in the Ministry of Finance (Shri L. N. Mishra): On behalf of Shri Sachindra Chaudhuri, I move*:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain further sums from and out of the

*Moved with the recommendation of the President.